रात्रि क्लास 17/1/69 ओम शान्ति शिवबाबा याद है?

मुरली कब मिस न करनी है। मुरली का ही गायन है। दुनिया वालों को यह पता नहीं है मुरली किसकी है। जादूगर की मुरलियां कौन सी है? जादूगर, मुरलीधर कौन है? सभी मुंझे हुए हैं। कृष्ण का ही नाम लेंगे। उनको यह पता नहीं है जो भी मनुष्य मात्र हैं सभी पार्टधारी एक्टर्स हैं। सभी पार्ट में आते हैं। शुरू से अन्त तक आते ही रहते हैं। पार्ट बजाते ही रहते हैं। बच्चों को मालूम हुआ सभी एक्टर्स कौन हैं, पार्टधारी कौन हैं? वह ड्रामा है इनमें सभी एक्टर्स हैं और अविनाशी एक्टर्स हैं। इनका एक्ट व पार्ट कब विनाश नहीं होता। बाप नई प्वाइंट समझाते हैं, एक भी मुरली मिस की तो जैसे स्कूल में एबसेंट पड़ गये। यह है बेहद के बाप का स्कूल। इसमें कब मिस न करनी चाहिए। दुनिया में किसको भी पता नहीं है, यह बेहद का बड़ा स्कूल है। बाप ही हर 5000वर्ष बाद आकर पढ़ाते हैं। शास्त्रों में यह बातें नहीं हैं। बाप कब आकर पढ़ाते है, किसको भी पता नहीं है। स्वर्ग की स्थापना होती है, यह भी विचारे कोई नहीं जानते। तुम सभी कुछ जानते हो। यह पढ़ाई बहुत2 अथाह कमाई की है। बच्चों को जन्म–जन्मान्तर का पढ़ाई का फल मिल जाता है। एक बारी नॉलेज सुना तो पक्का धारण हो जाना चाहिए; परन्तु भूल जाते हैं, भूलने के कारण कुछ न कुछ भूल हो पड़ती है। इस विनाश का पढ़ाई से पूरा ताल्लुक है। तुम्हारी पढ़ाई पूरी होगी, वहाँ लड़ाई शुरू होगी। इसमें एक ही दर्जा है जो इतना टाइम लेते हैं। याद करते जब मार्क्स पूरी हो जाती है दूसरे का भी इम्तिहान हो जाती है। लड़ाई लगती है तुम्हारा मदार है लड़ाई पर। लड़ाई का मदार तुम पर है, तुम्हारा पढ़ाई पर। तुम्हारी पढ़ाई पूरी होगी तो लड़ाई लगेगी। भगवानुवाच कहते हैं; परन्तु जानते नहीं हैं। यह नई दुनिया के लिये नया ज्ञान है। इसलिये मनुष्य मुंझते हैं। कुछ भी पता नहीं है। गीता किसने सुनाई, राजयोग किसने सिखाया? नई बात है ना। शास्त्रों में सभी है झूठी बातें। मेहनत लगती है। सतयुग में अपन को आत्मा समझ दूसरे को आत्मा नहीं समझेंगे। ऐसे नहीं वहां आत्मअभिमानी रहते हैं। नहीं, वहां भी देहअभिमान है। देहअभिमान बिगर काम न चल सके। इस समय तुम देहीअभिमानी बनते हो। अपन को आत्मा समझ बाप को याद करते हो। यह सिर्फ अभी बाप ही समझाते हैं। जो भी ब्राह्मण बनते हैं; क्योंकि आत्मा का पाप परमात्मा बाप की याद से ही कटनी है। विघ्न याद में ही पड़ते हैं। माया लिंक तोड़ देती है याद की। क्योंकि विघ्न पड़ते हैं। टाइम चाहिए ना जो तुम पक्के हो जाओ कल्प पहले मिसल। पुरूषार्थ करते हो नम्बरवार वहां फिर नम्बरवार ही पद पावेंगे। बाप समझाते भी हैं भारत के लिये ही हार जीत का खेल है। तुम कह सकते हो और कोई भी धर्म वाले स्वर्ग नहीं देखते हैं तो उनके बच्चे कैसे देखेंगे। अभी बाप स्वर्ग स्थापन कर रहे हैं। तुम बच्चे स्वर्ग के मालिक बनते हो। तो याद करना है। भल बिन्दी बुद्धि में याद ही नहीं आती। अच्छा शिव को तो याद करो तो पाप कटें। बड़े रूप पर हिरे हुये हो, बड़ा ही सही। मतलब शिवबाबा को याद करो। भक्तिमार्ग में भी शिव को तो याद करते हो ना। बड़े को भी याद किया तो सभी पाप कट जावेंगे। अनपढ़े हो तो बाप को तरस पड़ता है। तो बड़े रूप में भी याद किया तो पाप कट जावेंगे और स्वदर्शन–चक्रधारी तो सभी बने हो। देवता, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र। अभी फिर ब्राह्मण बनते हो। कितना सहज है। एक के सिवाय दूसरा कोई बुद्धि में याद नहीं आना चाहिए। दैवीगुण तो धारण करनी ही है। गाया जाता है तुरन्त दान महाकल्याण। समझो शिवबाबा के पास कुछ भेज देना है तो फौरन भेज देना चाहिए। शुभ कार्य में देरी न करनी चाहिए। क्योंकि आजकल तो मौत सिर पर खड़ा है। अचानक मौत हो जाता है तो कितना नुकसान हो जाता है। शुभ कार्य फट से कर देना चाहिए। कोई मर पड़ते हैं अर्थात् बाप का बनकर माया के बन जाते हैं। कोई का शरीर भी छूट जाता है। बाप गरीब–निवाज़ है ना। अभी तो समझते हो सभी गरीब हैं। साहूकारों की साहूकारी खलास हो जानी है। रिहर्सल भी होगी। फ्लड सभी बह जावेंगे। यह ड्रामा है कुछ विचार नहीं होता है। पहले है सुख फिर दुःख। बाप कहते हैं आसुरी सम्प्रदाय हैं। यह समझाते हैं। ग्लानि नहीं। बाप पढ़ाने आते हैं। समझाते हैं सच्च2 यह रावण राज्य है। खुशी होती है विनाश होगा। रक्त की नदियां बहेंगी। दुःख की बात नहीं। विनाश होगा खुशी होती है। तब तो फिर सुख–शान्ति होगी ना। खेल में कब दुःख होता है क्या? यह भी साक्षी हो खेल देखना है। निन्दा नहीं करते। हर बात की बाप समझानी देते हैं, ग्लानी नहीं करते। बेहद का बाप कब ग्लानी नहीं कर सकते। सभी बातें बच्चों को समझाते हैं। अच्छा, मीठे2 रूहानी बच्चों को रूहानी बापदादा का याद–प्यार गुडनाइट और नमस्ते।